

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव

सुशील दत्त उपाध्याय¹ एवं डॉ. पवन कुमार शर्मा²

¹ शोधार्थी, शिक्षा-विभाग

² सहायक प्रोफेसर, शिक्षा-विभाग

मोनाड विश्वविद्यालय, हापुर

सारांश

माध्यमिक विद्यालय की अवस्था विद्यार्थी के जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण विकासात्मक अवस्था होती है। इस अवधि में बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है और उसके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा, सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक संतुलन, अनुशासन, उत्तरदायित्व तथा निर्णय लेने की क्षमता में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगते हैं। विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास को केवल उसकी व्यक्तिगत क्षमताओं अथवा जैविक विशेषताओं के आधार पर नहीं समझा जा सकता, क्योंकि परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, सामाजिक वातावरण तथा आर्थिक परिस्थितियाँ भी उसके विकास को प्रभावित करती हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति में मुख्यतः परिवार की आय, माता-पिता की शैक्षिक स्थिति, व्यवसाय, आवासीय परिस्थितियाँ, परिवार में उपलब्ध शैक्षिक साधन तथा सामाजिक अवसरों को सम्मिलित किया जाता है। विभिन्न अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा सामाजिक-भावनात्मक विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया जा सकता है।

मुख्य संकेतक: - माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक संसाधन, किशोरावस्था।

परिचय

व्यक्तित्व व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, व्यवहार, अभिवृत्तियों, आदतों, सामाजिक संबंधों तथा परिस्थितियों के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं का समग्र स्वरूप है। विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण एक निरंतर चलने वाली

प्रक्रिया है, जो जन्म से आरंभ होकर परिवार, विद्यालय और समाज के विभिन्न अनुभवों के माध्यम से विकसित होती रहती है। माध्यमिक विद्यालय की अवस्था इस प्रक्रिया में विशेष महत्व रखती है, क्योंकि इसी समय विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व की विशिष्ट पहचान विकसित करना आरंभ करता है। इस अवस्था में वह अपने परिवार से प्राप्त मूल्यों को समझता है, मित्रों के साथ संबंध स्थापित करता है, विद्यालयी वातावरण में अपनी भूमिका निर्धारित करता है तथा भविष्य के प्रति अपनी आकांक्षाएँ विकसित करता है।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण होता है। परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा, रहने की परिस्थितियाँ तथा बच्चों को उपलब्ध संसाधन उसके मानसिक और सामाजिक विकास को प्रभावित कर सकते हैं। जिन परिवारों में पर्याप्त आर्थिक एवं शैक्षिक संसाधन उपलब्ध होते हैं, वहाँ विद्यार्थियों को पुस्तकें, अध्ययन सामग्री, खेल, कला, सांस्कृतिक गतिविधियों, भ्रमण तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के अधिक अवसर मिल सकते हैं। इसके विपरीत, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को कई बार सीमित संसाधनों, पारिवारिक जिम्मेदारियों तथा शैक्षिक सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति को केवल पारिवारिक आय के आधार पर निर्धारित करना उचित नहीं है। माता-पिता की शैक्षिक योग्यता, उनका व्यवसाय, परिवार का सामाजिक वातावरण, आवास की स्थिति, अध्ययन के लिए उपलब्ध स्थान, पुस्तकों की उपलब्धता तथा विद्यालय से संबंधित संसाधनों तक पहुँच भी इसके महत्वपूर्ण घटक हैं। थॉमसन (2018) के अनुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके सामाजिक-आर्थिक परिवेश के बीच संबंध को समझने के लिए परिवार तथा विद्यालय दोनों के संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस प्रकार सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थी के विकास के लिए उपलब्ध अवसरों और अनुभवों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण संदर्भगत कारक है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति की अवधारणा

सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अर्थ परिवार की सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से है। इसमें परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति, आवासीय सुविधा तथा बच्चों के लिए उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों को सम्मिलित किया जाता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में सामान्यतः शिक्षा के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध हो सकते हैं। ऐसे परिवारों में बच्चों के लिए अध्ययन का उपयुक्त वातावरण,

अतिरिक्त शैक्षिक सामग्री, पुस्तकें, तकनीकी साधन तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के अवसर उपलब्ध होने की संभावना अधिक रहती है।

दूसरी ओर, निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में आर्थिक सीमाएँ विद्यार्थियों के विकासात्मक अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं। आर्थिक कठिनाइयों के कारण विद्यार्थियों को आवश्यक शैक्षिक सामग्री प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। कुछ परिस्थितियों में उन्हें घरेलू कार्यों अथवा अन्य जिम्मेदारियों में अधिक समय देना पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियाँ उनके अध्ययन, सामाजिक सहभागिता तथा आत्म-विकास के लिए उपलब्ध समय को सीमित कर सकती हैं। हालांकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निश्चित निर्धारक नहीं माना जा सकता, क्योंकि व्यक्तिगत क्षमता, पारिवारिक स्नेह, विद्यालयी वातावरण और सामाजिक समर्थन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति और व्यक्तित्व विकास

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें पुस्तक पढ़ने, खेलकूद, संगीत, चित्रकला, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा शैक्षिक भ्रमण में भाग लेने के अवसर अधिक प्राप्त हो सकते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना, रचनात्मकता तथा सामाजिक व्यवहार को विकसित करने में सहायक हो सकती हैं।

अयूब तथा उनके सहयोगियों (2018) के अध्ययन से पता चलता है कि माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और व्यक्तित्व के बीच संबंध सभी व्यक्तित्व गुणों के लिए समान नहीं होता। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति व्यक्तित्व निर्माण का एकमात्र कारण नहीं है। व्यक्ति की जन्मजात विशेषताएँ, पारिवारिक संबंध, शिक्षा तथा जीवन के अनुभव भी उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इसलिए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का अध्ययन करते समय सामाजिक-आर्थिक स्थिति को व्यापक सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भ में देखना आवश्यक है।

माता-पिता की शिक्षा और व्यक्तित्व विकास

माता-पिता की शैक्षिक स्थिति विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। शिक्षित माता-पिता सामान्यतः बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं तथा उनके अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करने में सहायता कर सकते हैं। वे बच्चों को पुस्तक पढ़ने, नियमित अध्ययन करने, समय का सदुपयोग करने तथा भविष्य की शिक्षा के संबंध में उचित मार्गदर्शन दे सकते हैं।

माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव बच्चों की भाषा, अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास और सामाजिक व्यवहार में भी दिखाई दे सकता है। जब माता-पिता बच्चों के विचारों को सुनते हैं और उन्हें उचित निर्णय लेने के अवसर प्रदान करते हैं, तो बच्चों में स्वतंत्र सोच तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो सकती है। वर्ष 2018 में किए गए एक अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा माता-पिता की शिक्षा के संदर्भ में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व संबंधी कारकों में अंतर का अध्ययन किया गया और महत्वपूर्ण संबंधों की सूचना दी गई। इससे यह संकेत मिलता है कि पारिवारिक शैक्षिक वातावरण व्यक्तित्व निर्माण में उपयोगी भूमिका निभा सकता है।

पारिवारिक आय और व्यक्तित्व विकास

पारिवारिक आय सामाजिक-आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण घटक है। परिवार की आर्थिक स्थिति बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आवास तथा मनोरंजन संबंधी सुविधाओं को प्रभावित कर सकती है। पर्याप्त आय वाले परिवार बच्चों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार अध्ययन सामग्री, पुस्तकें तथा अन्य शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने में अधिक सक्षम हो सकते हैं।

इसके विपरीत, आर्थिक कठिनाइयों वाले परिवारों में बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है। लगातार आर्थिक दबाव परिवार के वातावरण को प्रभावित कर सकता है और कभी-कभी बच्चों के भावनात्मक अनुभवों पर भी प्रभाव डाल सकता है। एकी तथा उनके सहयोगियों (2018) ने परिवार की आय और बच्चों के व्यक्तित्व संबंधी गुणों तथा व्यवहारों के संबंध का अध्ययन किया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक आर्थिक परिस्थितियाँ बच्चों के व्यवहार तथा विकासात्मक परिणामों को समझने में महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करती हैं।

फिर भी यह मानना उचित नहीं होगा कि कम आय वाले परिवारों के सभी विद्यार्थियों का व्यक्तित्व कमजोर होगा या अधिक आय वाले परिवारों के सभी विद्यार्थियों का व्यक्तित्व अधिक विकसित होगा। परिवार का

भावनात्मक वातावरण, माता-पिता का सहयोग, विद्यालयी अनुभव तथा विद्यार्थी की व्यक्तिगत विशेषताएँ इस संबंध को काफी हद तक प्रभावित कर सकती हैं।

पारिवारिक वातावरण की भूमिका

परिवार का वातावरण विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की आधारभूत इकाई है। प्रेम, सुरक्षा, सहयोग, संवाद तथा प्रोत्साहन से युक्त परिवार विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और भावनात्मक स्थिरता विकसित करने में सहायता कर सकता है। इसके विपरीत, अत्यधिक संघर्ष, उपेक्षा अथवा असुरक्षा वाला वातावरण विद्यार्थी के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित कर सकता है।

माता-पिता का व्यवहार बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में विशेष भूमिका निभाता है। जब माता-पिता बच्चों की उपलब्धियों की सराहना करते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं और असफलता की स्थिति में उनका मार्गदर्शन करते हैं, तब बच्चों में आत्मविश्वास और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता विकसित हो सकती है। डुआन, गुआन तथा बू (2018) ने विद्यालयी विद्यार्थियों के संदर्भ में माता-पिता की सहभागिता को शैक्षिक उपलब्धि और विद्यालयी व्यवहार से संबंधित पाया। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ अभिभावकीय सहभागिता भी विद्यार्थी के विकास को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है।

विद्यालयी वातावरण और व्यक्तित्व विकास

विद्यालय विद्यार्थी के सामाजिक विकास का दूसरा प्रमुख केंद्र है। विद्यालय में विद्यार्थी शिक्षक, सहपाठी और अन्य कर्मचारियों के साथ नियमित रूप से संपर्क करता है। विद्यालयी वातावरण उसके अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व, उत्तरदायित्व और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है। यदि विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जाते हैं, तो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के बीच अवसरों की असमानता को कम किया जा सकता है।

शिक्षक की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक यदि विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करता है, उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानता है तथा उन्हें प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने और गतिविधियों में भाग लेने का अवसर देता है, तो विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि हो सकती है। विद्यालय में खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद, नाटक, चित्रकला तथा अन्य गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सामाजिकता और नेतृत्व क्षमता विकसित करने में सहायक होती हैं।

सामाजिक संबंध और व्यक्तित्व विकास

किशोरावस्था में मित्र समूह का प्रभाव बढ़ जाता है। विद्यार्थी अपने मित्रों के साथ विचारों, भावनाओं और अनुभवों का आदान-प्रदान करता है। सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि मित्र समूह के गठन और सामाजिक अनुभवों को कुछ हद तक प्रभावित कर सकती है। विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को साथ सीखने और गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलने से उनमें सहयोग, सहिष्णुता और सामाजिक समझ विकसित हो सकती है।

विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध उनके आत्मविश्वास और आत्म-अवधारणा को भी प्रभावित कर सकते हैं। जिन विद्यार्थियों को अपने मित्रों तथा शिक्षकों से सकारात्मक समर्थन प्राप्त होता है, वे विद्यालयी गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। इस प्रकार विद्यालय सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न अंतर को कम करने के लिए महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति और आत्म-अवधारणा

आत्म-अवधारणा का अर्थ व्यक्ति की अपने संबंध में विकसित धारणा से है। विद्यार्थी अपनी क्षमताओं, उपलब्धियों, सामाजिक स्थिति तथा दूसरों के साथ अपने संबंधों के आधार पर अपने बारे में धारणा बनाता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति इस धारणा को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकती है।

उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी के पास अध्ययन के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं और उसे परिवार तथा विद्यालय से निरंतर प्रोत्साहन मिलता है, तो उसमें अपनी क्षमताओं के प्रति सकारात्मक धारणा विकसित हो सकती है। दूसरी ओर, संसाधनों की कमी, लगातार आर्थिक कठिनाई या सामाजिक तुलना की परिस्थितियाँ कुछ विद्यार्थियों में हीनता की भावना उत्पन्न कर सकती हैं। हालांकि प्रत्येक विद्यार्थी इन परिस्थितियों पर समान प्रतिक्रिया नहीं करता। व्यक्तिगत आत्मविश्वास, पारिवारिक सहयोग और विद्यालयी समर्थन इस प्रभाव को कम कर सकते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति और भावनात्मक विकास

व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष भावनात्मक विकास है। किशोरावस्था में विद्यार्थी अनेक भावनात्मक परिवर्तनों से गुजरता है। इस समय पारिवारिक वातावरण और सामाजिक परिस्थितियाँ उसके भावनात्मक

संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं। आर्थिक कठिनाइयों वाले परिवारों में उत्पन्न तनाव का प्रभाव कभी-कभी बच्चों के भावनात्मक व्यवहार पर पड़ सकता है।

इसके विपरीत, सुरक्षित पारिवारिक वातावरण विद्यार्थी को अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सहायता कर सकता है। विद्यालय में परामर्श व्यवस्था, सहायक शिक्षक तथा मित्र समूह भी भावनात्मक विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के अध्ययन में भावनात्मक पक्ष को सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के साथ जोड़कर देखना आवश्यक है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उत्तरदायित्व की भावना

उत्तरदायित्व व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है। विद्यालयी जीवन में विद्यार्थी को समय पर कार्य पूरा करना, नियमों का पालन करना, समूह में कार्य करना और अपने निर्णयों के परिणामों को समझना सीखना पड़ता है। पारिवारिक वातावरण और सामाजिक परिस्थितियाँ इस गुण के विकास को प्रभावित कर सकती हैं।

डुआन, गुआन तथा बू (2018) के अध्ययन में माता-पिता की सहभागिता और विद्यालयी व्यवहार के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया गया। इससे संकेत मिलता है कि जब माता-पिता बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, तो विद्यार्थियों के विद्यालयी व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे सकते हैं। अतः परिवार और विद्यालय दोनों को विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व तथा अनुशासन के विकास के लिए सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करना चाहिए।

सामाजिक-आर्थिक असमानता और व्यक्तित्व विकास

सामाजिक-आर्थिक असमानता के कारण विद्यार्थियों को विकास के लिए समान अवसर प्राप्त नहीं होते। कुछ विद्यार्थियों के पास निजी अध्ययन कक्ष, पुस्तकें, संगणक, दूरसंचार साधन तथा अतिरिक्त शिक्षण की सुविधाएँ होती हैं, जबकि कुछ विद्यार्थियों के पास मूलभूत शैक्षिक संसाधनों की भी कमी हो सकती है। ऐसी परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों में अंतर पैदा कर सकती हैं।

हालाँकि संसाधनों की कमी को व्यक्तित्व विकास में निश्चित बाधा नहीं माना जा सकता। अनेक विद्यार्थी सीमित संसाधनों के बावजूद उच्च आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करते हैं। इसका कारण परिवार, शिक्षक, समुदाय तथा विद्यार्थी की व्यक्तिगत दृढ़ता हो सकती है। इसलिए सामाजिक-

आर्थिक स्थिति को व्यक्तित्व विकास के एक प्रभावकारी कारक के रूप में देखना चाहिए, न कि एकमात्र निर्धारक के रूप में।

भारत के संदर्भ में स्थिति

भारत में विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में व्यापक विविधता पाई जाती है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, विभिन्न आय वर्गों तथा विभिन्न सामाजिक समूहों के विद्यार्थियों को शिक्षा और विकास के अवसर समान रूप से उपलब्ध नहीं होते। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की भौतिक सुविधाएँ, पुस्तकालय, तकनीकी साधन और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों की उपलब्धता कुछ स्थानों पर सीमित हो सकती है। शहरी क्षेत्रों में संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक होने के बावजूद आर्थिक असमानता विद्यार्थियों के अनुभवों में अंतर उत्पन्न कर सकती है।

भारत में किशोरों के संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक कौशल पर किए गए शोध में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साथ कौशलों में अंतर पाया गया है। वर्ष 2022 के एक अध्ययन में ग्रामीण भारत के बड़ी संख्या में किशोरों के आँकड़ों का अध्ययन किया गया तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति और संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक कौशलों के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया। इससे संकेत मिलता है कि सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव विद्यार्थियों के विकास के केवल शैक्षिक पक्ष तक सीमित नहीं है।

व्यक्तित्व विकास में विद्यालय की सुधारात्मक भूमिका

विद्यालय सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक सामग्री, पुस्तकालय सुविधा, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों, परामर्श तथा नेतृत्व के अवसर उपलब्ध कराकर विद्यालय उनके व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा दे सकता है। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क अध्ययन सामग्री तथा अतिरिक्त शैक्षिक सहायता भी उपयोगी हो सकती है।

विद्यालय में ऐसा वातावरण विकसित किया जाना चाहिए जहाँ विद्यार्थी अपनी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण स्वयं को किसी भी प्रकार से कमतर न समझें। शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं का सम्मान करना चाहिए तथा उनकी उपलब्धियों को केवल आर्थिक संसाधनों के आधार पर नहीं देखना चाहिए।

इस प्रकार विद्यालय सामाजिक समानता और व्यक्तित्व विकास दोनों को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण संस्थान बन सकता है।

निष्कर्ष

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव बहुआयामी है। परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, आवासीय परिस्थितियाँ, शैक्षिक संसाधन तथा सामाजिक अवसर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए उपलब्ध अनुभवों को प्रभावित कर सकते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों को अधिक शैक्षिक एवं सह-पाठ्यक्रम अवसर प्रदान कर सकती है, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति कुछ विद्यार्थियों के सामने संसाधन संबंधी सीमाएँ उत्पन्न कर सकती है। फिर भी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को व्यक्तित्व का एकमात्र निर्धारक नहीं माना जा सकता। व्यक्तिगत क्षमताएँ, पारिवारिक स्नेह, अभिभावकीय सहभागिता, शिक्षक का व्यवहार, विद्यालयी वातावरण, मित्र समूह तथा सामाजिक समर्थन भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

अतः माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए ऐसी शिक्षा व्यवस्था आवश्यक है जिसमें सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हों। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री, परामर्श, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों और नेतृत्व के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। माता-पिता को बच्चों की शिक्षा और भावनात्मक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाया जाना चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से स्वतंत्र होकर समान व्यवहार करना चाहिए। इस प्रकार परिवार, विद्यालय और समाज के सामूहिक प्रयासों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अनुशासन, सामाजिकता, उत्तरदायित्व, नेतृत्व तथा भावनात्मक संतुलन जैसे व्यक्तित्व गुणों का विकास किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. एकी, आर., कोपलैंड, डब्ल्यू., कोस्टेलो, ई. जे., एवं सिमियोनोवा, ई. (2018). परिवार में बच्चों के व्यक्तित्व, गुण और व्यवहार पर प्रभाव। अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 108(3), 775–827।
2. अयूब, एम., गोस्लिंग, एस. डी., पॉटर, जे., शनाहन, एम., एवं रॉबर्ट्स, बी. डब्ल्यू. (2018). माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तित्व और जीवन प्रभाव के बीच संबंध। सामाजिक मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तित्व विज्ञान, 9(3), 338–325।

3. डुआन, डब्ल्यू, गुआन, वाई, एवं बू एच. (2018). चीन के कनिष्ठ स्कूली छात्रों की शुरुआत और स्कूली व्यवहार पर माता-पिता की प्रशंसा और सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव। दार्शनिक अध्ययन, 9,952।
4. थॉमसन, एस. (2018). विद्यालय में उपलब्धि और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि—एकस्टार्टअप दृष्टिकोण। विज्ञान अधिगम की प्रकृति, 3, 5।
5. झांग, जे., एवं ज़िग्लर, एम. (2018). व्यक्तित्व गुणस्टार्ट प्रदर्शन की भविष्यवाणी क्यों करते हैं? श्री स्टेज वाला अनुदैर्घ्य अध्ययन। पर्सन रिसर्च पत्रिका, 74, 182-193।
6. यूनिसेफ भारत। (2020)। शहरी भारत में बच्चे और किशोर: वंचना का स्वरूप और विस्तार।
7. यूनिसेफ। (2021). दक्षिण एशिया में कोचिंग के बार-बार बंद होने से सीखने की हानि और कमजोरियाँ।
8. संजय यादव 2021। छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक कौशल में सामाजिक असमानता: क्या व्यक्तित्व गुण का स्तर और स्टार्टअप उपलब्धि के साथ उनके संबंध माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रतिबंध है?
9. मनोज तिवारी 2022। भारत में असंज्ञानात्मक कौशल में लैंगिक अंतर। आर्थिक व्यवहार एवं संगठन पत्रिका, 193, 66-97।